चलनी में पानी

मनोज 'भावुक'

चलनी में पानी

(भोजपुरी काव्य संकलन)

मनोज 'भावुक'

नवशिला प्रकाशन
नागलोई, दिल्ली – 110041

चलनी में पानी

कवि

मनोज भावुक

© सर्वाधिकारः
कवि, मनोज 'भावुक' के आधीन

प्रथम संस्करण : 2010

मूल्यः 100/–

ISBN: 978–93–80169–11–8

प्रकाशकः नन्द कुमार श्रीवास्तव
नवशिला प्रकाशन
ए–75, श्रीराम कालोनी, निलोठी एक्स.
नांगलोई, दिल्ली – 110041
फोन : 9213317238, 9211336546

आवरण : सुनील कुमार राय
शब्द संयोजन : नीरज कुमार, द्वारा– कुलदीप श्रीवास्तव,
संपादकः www.purvanchalexpress.com
23/116, वीर सावरकर ब्लॉक,
शकरपुर, दिल्ली – 110092
फोन– 011 – 43022731, 9891414433

Chalani Me Pani (Collection of Doha and Songs)
By Manoj 'Bhawuk'

समर्पण

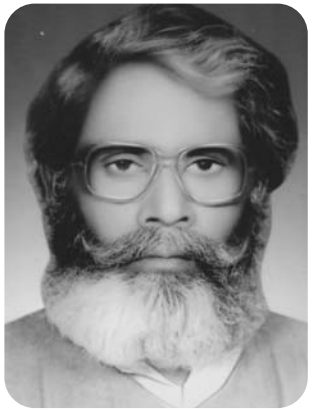

बाबूजी
श्री रामदेव सिंह

माई
श्रीमती सुनैना सिंह

निवेदन

अपने गीतों के प्रति सचेष्ट रहते हुए मै अपने प्रिय गायक कलाकारों से आग्रह करता हूँ कि वे मेरे किसी भी रचना (गीत, गजल, दोहा) को प्रसारित करने, कैसेट कराने या फिल्मों में लेने से पूर्व मेरी लिखित अनुमति अवश्य प्राप्त कर लें।

मनोज 'भावुक'
1 जनवरी 2010

जवन छना ना सकल

मनोज सिंह 'भावुक' के किताब 'चलनी में पानी' के पांडुलिपि जब हमरा सामने आइल त एक–एक पन्ना के विचार दृष्टि जाने के उत्सुकता भइल। एकरा पहिले उनकर भोजपुरी गजल के किताब **'तस्वीर जिन्दगी के'** प्रकाशित हो चुकल बा। ओह पुस्तक पर पाठकन के व्यापक वर्ग में चर्चा भइल रहे, गोष्ठी में विचार–विमर्श चलल आ गजलकार के सम्मान कइल गइल।

रचनाकार के नजदीक से जानल आ उनका रचना के समझ के कुछ लिखल समीक्षक के कबो कबो धर्म संकट में डाल देला। तब व्यक्ति आ कृतित्व नदी में पानी के हिलोर नियर हिलकोर मारे लागेला। ओही उलझन से हमहूँ गुजरनी। तबो 'चलनी में पानी' पर कुछ कहल जरूरी बा। एह किताब में गीत आ दोहा के रसरी से जवन उबहन तइयार भइल बा ओकरा मजबूतिए के कारण ढेर पाठक लोग लगे चल आवत बा। गीतन में मन के उल्लास–उमंग, प्रेम–श्रृंगार आ प्रकृति के सुन्दर–सुन्दर बिम्ब बा त दोहन में जिनिगी के अनुभव भरल बा। केतना जगह लागत बा कि रचनाकार अनुभव के सूत्र रूप में प्रकट कर रहल बाड़े।

साहित्य के पाठक सभे जानत बा कि हिन्दी में जवन गीत परम्परा भक्तिकाल (मध्यकाल) से चलल उ आज तक नाना प्रकार के रूप बदलत आ आपन अभिव्यक्ति के परिसर के बिस्तार करत आगे बढ़त जात बा। भोजपुरी भी जब गीत के गोल में ढुक के आपन राग अलापे लागल त बुझाइल कि एकरो में कम वजन नइखे। शुरू में तेग अली तेग, रामकृष्ण वर्मा, बिसराम आ दूधनाथ उपाध्याय जइसन लोग भोजपुरी गीत के नींव रखल। आगे चलके भोजपुरी गीत साहित्य में युगबोध आ राष्ट्रीयता के आधार बनावे में 'बटोहिया' के रघुवीर नारायण, 'फिरंगिया' के मनोरंजन प्रसाद सिंह आ बिदेसिया के जनकवि भिखारी ठाकुर के बड़का हाथ रहल। पूरबी आ झूमर के कवि सम्राट महेन्द्र मिसिर के भी पूरा सहयोग मिलल।

भोजपुरी के गीतन में संगीतात्मकता मुख्य रूप से ग्रामीण चेतना से मिलल। ओह मे प्रकृति के कम सहयोग नइखे। हर साहित्य रचना के प्रमुख आधार मनुष्य होला आ उहे भाव से भोजपुरी गीतन के क्षमता बढल। 'भावुक' प्रकृति आ पुरूष के समन्वित रूप के अपना रचना में व्यक्त कइलें बाड़ें। **'चलनी में पानी' सहज प्रयोग में भी गूढ दर्शन के व्यक्त करत बा। इ जिन्दगी एगो चलनी समान**

बा। आदमी एकरा से भर जिन्दगी पानी उलीचते रह जाला तबो आखिर में भेंटाला कुछ ना। नश्वरता दर्शन के अइसन बिम्ब कवनो साहित्य में दुर्लभ ना, त बहुत कम बा।

कवि के पास जीवन अनुभव आ दर्शन गूंथल बा। संसार आ मनुष्य के रिश्ता नाता के जवन विद्रूपता बा ओकरो के बड़ा स्वाभाविकता से वर्णन कइले बाड़े मनोज भावुक। मनुष्य के जीवन समय पाके आपन रूप बदलत रहेला आ ओही बदलाव के भीतर कवनो विडम्बना के दर्शन होखे लागेला

भरल–पूरल घरवा में मन खाली–खाली
दियरी जरे पर मने ना दीवाली। (गीत – 1)

चाहे दोसर गीत में उ लिखत बाड़े –

उठल लहोक, सभे अगिआइल
बाबूजी के घरवा आगे–आग हो गइल। (गीत – 2)

कवनो गीत में गीतकार किस्मत के कोसत बाड़े –

तनवा के पिंजरा में मनवा के चिरई, चिरई के टूटल पॉख
कतनो फुर्र–फुर्र करिहें बाकिर धरिहें ना आकाश। (गीत – 7)

जीये खातिर मन में हौसला आ आशा होखे के चाहीं। आशावादी संदेश देत 'भावुक' लिखत बाड़न –

जब ले बा देहिया में प्रान
तू असरा के दियरी जंरइहऽ। (गीत – 8)

कई गो कविता में प्यार–मोहब्बत, संयोग वियोग के भाव भी उकेरल गइल बा।

मुहब्बत बाटे तोहरे से केहू से प्यार मति करीहऽ। (गीत – 9)

बहुत से गीतन में जिनिगी के व्याख्या भइल बा। ई मनोज भावुक के प्रिय विषय बा आ एही से जिनिगी के खल–बेखल के शेड्स दिखाई पड़त बा। अपना दिल के बात कहे खातिर उ प्रकृति से उपमान ले लेत बाड़े। ओमे सूरज, चाँद, बादल, दरिया, लहर, आसमान, मौसम सब समेटा गइल बा।

मन त भटकेला, रोज भटकेला, उम्र भर अइसे,
अपने दरिया में प्यास से तडपे एक लहर जइसे। (गीत – 10)

कवि के कोमल मन प्रिया के आस पर टिकल बा। रात पियासल बा, साँस पियासल बा। इ सब लिखला के बादो उ मन के भीतरी झाँके के सुझाव देत बाड़े। एह से इहो बात साफ–साफ प्रकट होता कि उनकरा कविता कर्म में मनोविज्ञान के भी महत्वपूर्ण भूमिका बा।

'भावुक' के कई गो गीत आज पाठक–श्रोता के जुबान पर बा – 'तहरे से घर बसाइब, दिल के गली में अचके गुलजार हो गइल बा', 'पिरितिया लगा के भुला त ना जइबऽ' अइसन कई गो गीत श्रृंगारिक बा। श्रृंगार के वियोग–संयोग भावुक के बहुत प्रिय बा।

एह पुस्तक के दोसरका पक्ष दोहा बा। शैली–शिल्प अलग होके भी ओमे भावुक के मन ओही तरी रमल बा जे तरी उनकरा गीतन में। गीत में त छंद के बंधन से अधिका लय पर धेयान दीहल जाला बाकिर दोहा में केवल दू पंक्ति में एगो तथ्य के खुलासा करे के होला। दोहा में अंतिम पंक्ति में तुकान्त मिलेला। एही से ओमे गेयता आ सम्प्रेषणीयता के गुण होला। दोहा मात्रिक छंद ह जवना के चार चरण होला । पहिलका आ तीसरका चरण तेरह–तेरह आ दोसरका – चउथका चरण में एगारह – एगारह मात्रा के प्रयोग होला। भावुक के दोहन में जिनिगी के सचाई निमन से उभरल बा। सरल–सहज अभिव्यक्ति बा। भाषा के कवनो उलझन नइखे आ ना दर्शन के रहस्य बा। प्राचीन दोहाकार कबीर, बिहारी, रहीम जइसन कवि लोग एह दोहन के पढत में इयाद पड़ जाता।

पइसे माई–बाप बा, पइसे बा भगवान।
पइसा सब पर छा गइल, धर्म–कर्म–ईमान। (दोहा – 31)

आज के पढल लिखल लोग के जीवन के यथार्थ ओमे छिपल हल्का व्यंग्य – कइगो दोहन के इहे स्वभाव बा –

पढे बदे छूटल रहे, कबहूँ आपन देश।
अब धंधा–पानी बदे, चलनी फिर परदेश। (दोहा – 42)

XXX

जवना गाछी पर फरे, 'भावुक' मिठका आम।
तवने पर ढेला चले, दुपहर, सुबहो शाम। (दोहा – 64)

XXX

चलते–चलते राह में, आवे अइसन मोड़।
जहवाँ आपन साँस भी, देला संगत छोड़। (दोहा – 77)

गीतन के रचना में 'भावुक' हिन्दी के साथे उर्दू के भी अच्छा प्रयोग कइले बाड़े। तुकान्त में अइसन मजबूरी के सामना करे के पड़ेला। कवि अपना रचना में हिन्दी–उर्दू से परहेज नइखन कइले। इ अच्छा बात बा कि भारत जइसन देश में हिन्दी, उर्दू, भोजपुरी के मेल मिलाप भाषाई एकता के पहचान बा।

मिश्रित विधा के एह रचनन के प्रकाशित करके भावुक घोषणा कर देले बाड़े कि गीत के विधा होखे भा दोहा के, भोजपुरी साहित्य एमें हेठ नइखे।

'तस्वीर जिन्दगी के' जेतना देहलस ओही क्रम में **'चलनी में पानी'** आपन भाव– भाषा आ शैली–शिल्प के झंडा गाड़ रहल बा। कुछ रचना कमजोर बा, ओकनी के तनी सुधारे के पड़ी। आज के समाज, साहित्य, धर्म, दर्शन आदि के सहज दर्शन करके प्रस्तुत पुस्तक पाठक लोग के आकृष्ट करी।

एही विश्वास के साथ –

डा. रमाशंकर श्रीवास्तव
पूर्व वरिष्ठ रीडर, हिन्दी विभाग
राजधानी कालेज, (दिल्ली विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली
आवास फोन–011–28564719

अनुक्रम

दोहा

1. जिनगी रोज सवाल 15
2. फागुन के उत्पात : भइल गुलाबी गाल 26

गीत

1. बबुआ भइल अब सेयान कि गोदिये नू छोट हो गइल 33
2. टुकी–टुकी बाबूजी के बाग हो गइल 34
3. बांझ हो गइल बा संवेदना के गांव 35
4. अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया 36
5. तोहरा के देखला बरिस दिन भइलें 38
6. रतिया भर ॲखिया ई देखे चनरमा 39
7. किस्मत ले जाई कौना ओर 40
8. जब ले बा देहिया में प्रान 41
9. हम त हई मुसाफिर हमरा से तू प्यार मति करिहऽ 42
10. बोल रे मन, बोल 43
11. मुहब्बत के इयादन के भुलावल बा बहुत मुश्किल 44
12. हम तोहरा दिल में धड़की, तू हमरा दिल में धड़कऽ 45

13. तहरे से घर बसाएब 46
14. दिल के गली में अचके गुलजार हो गइल बा 47
15. नेह तहरा से लागल अँजोर हो गइल 48
16. पिरितिया लगा के भुला त ना जइबऽ 49
17. तहरे से करीले प्यार, हमार मन मितवा 50
18. जब जब आवेला तहरी इयाद हो 51
19. फागुन में फगुआ के लागल लहर, 52
20. दिल बा दियरी भइल, देह बाती भइल 54
21. फागुन के आइल बहार हो 55
22. गोरी के बदन गदरइले हो रामा 57
23. लड़ले तऽ ऑखिया, बथेला करेजवा काहे 58
24. रहिया में रहि–रहि डर लागे हो 59
25. अबकी आवे अइसन नयका साल 61
26. डूबत सूरज के निशान भइल जिनिगी 62
27. बेबाते के बात 63
28. लेके आइल बाटे पूर्वी वयार टी वी 65
29. इ आज के डिमांड बा रउरा ना बुझाई 66

चलनी में पानी

दोहा

जिनगी रोज सवाल

एगो से निपटीं तले, दोसर उठे बवाल।
केहू कतनो हल करी, 'जिनिगी रोज सवाल।।1।।

जिनिगी के दालान में का–का बा सामान।
ख्वाब, पंख, कइंची अउर लोर–पीर मुस्कान।।2।।

पाँख खुले त आँख ना, आँख खुले त पाँख।
एही से अक्सर इहाँ, सपना होला राख।।3।।

रिस्ता–नाता, नेह सब, मौसम के अनुकूल।
कबो आँख के किरकिरी, कबो आँख के फूल।।4।।

'भावुक' अब बाटे कहाँ, पहिले जस हालात।
हमरा उनका होत बा, बस बाते भर बात।।5।।

उनके के सब पूछ रहल, धन बा जिनका पास।
हमरा छूंछे भाव के, के डाली अब घास।।6।।

पर्वत से निकलल नदी, लेके मीठा धार।
बाकिर जब जग से मिलल, भइल उ खारे–खार।।7।।

अब के आई पास में, पेंड़ भइल अब ठूँठ।
'भावुक' दुनिया मतलबी, रिस्ता नाता झूठ।।8।।

हमरा कवना बात के, होई भला गरूर।
ना पद, ना धन, ज्ञान बा, ना कुछ लूर–सहूर।।9।।

तहरा से केतना लड़ी, जब तू रहलऽ पास।
बाकिर अब तहरे बिना, मन बा रहत उदास।।10।।

चढ़त उम्र के धूप बा, जियरा बा छपिटात।
'भावुक' दहकत सॉस अब ढोअल नइखे जात।।11।।

हमरा से ना हो सकल झूठ–मूठ के छाव।
चेहरा पर हरदम रहल, आंतर के हीं भाव।।12।।

छलक–छलक बहते रहल, पलक–पलक से नीर।
तबहूं हलुका ना भइल 'भावुक' मन के पीर।।13।।

नोच रहल बाटे उहे, राउर रोआँ–पाँख।
जेकरा के दिहनी कबो, रउरा आपन आँख।।14।।

घुट–घुट के कइसन जियल 'भावुक' सुबहो–शाम।
दुनिया में बाटे बहुत, जीये के पैगाम।।15।।

कतहूँ असरा ना मिलल, पेड़ भइल जब ठूँठ।
पड़ल गिलहरी सोच में, दुनिया अतना झूठ।।16।।

अपने मत धुनल करीं, चलीं समय के साथ।
बेटो से पूछल करीं, ओकरा मन के बात।।17।।

जहवाँ बेटा–बाप ना, बइठे कबहूँ साथ।
ओइसन घर के घर कहीं, कइसे ए रघुनाथ।।18।।

जवना घर के मालिके, अनपढ, मूर्ख गँवार।
ओह घर के हम का कहीं, राम लगइहें पार।।19।।

'भावुक' जो बाटे इहे, किस्मत के मंजूर।
भरल आम के बाग में, तहरा मिली धतूर।।20।।

मौत से आगे सोंच के, थाम्हीं जे पतवार।
हँसी–खुशी से जी सकी, उहे ए सरकार।।21।।

कबहूँ–कबहूँ गम इहाँ धरे खुशी के रूप।
एह से मुश्किल बा कहल, छाया ह कि धूप।।22।।

फूल बनी, काँटा बनी, बात हिया में जात।
शब्द–शब्द पर सोच के, रखिहऽ आपन बात।।23।।

'भावुक' जब तक ना चुभे, दिल में कवनो तीर।
कागज पर उतरे कहाँ ठीक–ठाक तस्वीर।।24।।

दुनिया से बा जे मिलल, हँसी–खुशी आ घात।
सौंप रहल बानी उहे, दोहा में सौगात।।25।।

बुढवा बरगद देख के, मन में आइल भाव।
माथ रहे आकाश में अउर जमीं में पॉव।।26।।

हियरा से हियरा मिलल, मिलल नैन से नैन।
ख्वाब भइल पूरा मगर, गइल आँख से रैन।।27।।

पढ के मत अइसे रखऽ, जस बासी अखबार।
खत में दिल के बात बा, कुछ त सोचऽ यार।।28।।

जिनिगी एगो राग ह, खुल के गाईं गीत।
का मालूम कब टूट जाय, सांसन के संगीत।।29।।

मीरा, तुलसी, जायसी, भावुक, सूर, कबीर।
खींच सकल केहू कहाँ, जिनिगी के तस्वीर।।30।।

पइसे माई–बाप बा, पइसे बा भगवान।
पइसा सब पर छा गइल, धर्म–कर्म–ईमान।।31।।

मनीआर्डर के आस में, चूल्हा परल उपास।
'भावुक' तहरा देश के, केतना भइल विकास।।32।।

पान–फूल से हम मिलब, भीतर से मुस्कात।
आईं हमरो द्वार पर, मत देखीं औकात।।33।।

टूट गइल संबंध त, राउर कवन कसूर।
पतझड़ में पतई सदा, रहे पेड़ से दूर।।34।।

जिये–मरे के शर्त पर, करत रही जे काम।
मंजिल तक जाई उहे, ऊहे दी परिणाम।।35।।

'भावुक' जेकरा पास बा, चौबीस घंटा काम।
ओकरा ना लागे कबो, जाड़ा गरमी, घाम।।36।।

प्यास बुताइल ना कबो, धवनी मिलो–मील।
जहवाँ भी गइनी उहाँ, मिलल रेत के झील।।37।।

भरल खजाना आस के, बाटे जेकरा पास।
उहे बा सबसे धनी, उहे बा बिन्दास।।38।।

पड़ल हवेली गाँव में 'भावुक' बा सुनसान।
लइका खोजे शहर में, छोटी मुकी मकान।।39।।

मरल आश–विश्वास जो अउर गइल मन हार।
तब बूझीं जे आदमी, भरलो–पुरल भिखार।।40।।

परदेसी 'भावुक' पिया, रोजे करिहऽ भेंट।
हमहूँ इंटरनेट पर, तूहूँ इंटरनेट।।41।।

पढे बदे छूटल रहे, कबहूँ आपन देश।
अब धंधा–पानी बदे, चलनी फिर परदेश।।42।।

रोजे रस्ता बदले के जेकरा बाटे रोग।
धोबी के कुत्ता बने, अक्सर उहे लोग।।43।।

मूक साधना में बहुत, ताकत होला मीत
भीड़–भाड़ से तू अलग, रहि के गावऽ गीत।।44।।

बड़–बुजुर्ग कहलें जहाँ, देखल हवे गुनाह।
'भावुक' हो मन ले गइल, उहवें रोज निगाह।।45।।

'भावुक' जे ना हो सकल, ओकर का अफसोस।
कवना–कवना बात के, लेबऽ माथे दोष।।46।।

माई रे जाई कहाँ, देवता पूजल तोर।
कहियो त होइबे करी, हमरो खातिर भोर।।47।।

मारे के बा बाज के, पीटत बानी ढोल।
गौरइयन के झुंड पर, दागत बानी गोल।।।48।

भाला लेके भोंक रहल बा जे बारम्बार।
ओहू दुश्मन के पुजे, भारत के सरकार।।49।।

दुनिया चाहे जे कहे, सभकर खींचे ध्यान।
चंचल, अल्हड़ देह आ मधुर–मधुर मुस्कान।।50।।

हमरा मन में बा उठल तहरे काहे चाह।
दिल में अपना सोच के फेरऽ तनी निगाह।।51।।

चलनी में पानी भरत, बीतल उम्र तमाम।
तबहूँ बा मन में भरम, कइनी बहुते काम।।52।।

'भावुक' दोहा बन करऽ, बहुते बीतल रात।
जइबऽ ना आफिस अगर, खइबऽ कइसे भात।।53।।

लम्बा दूरी तय करे 'भावुक' पातर धार।
फइलत–पसरत जे चले, से कब पहुंचे पार।।54।।

धुआँ उठे आकाश में खुद जरला के बाद।
'भावुक' तुहूँ जार दऽ, मन के सब अवसाद।।55।।

जिनिगी के हालात के, इहो एगो रूप।
अँगना में सावन मगर दुअरा बरिसे धूप।।56।।

अँगना गायब हो गइल, बुढिया खोजे घाम।
अपना–अपना रूम में सभका बाटे काम।।57।।

दिन बीतल जे घाम में ओकर फिक्र फिजूल।
खाली छाया में खिले कहवाँ कवनो फूल।।58।।

दुनिया से जब–जब मिलल, ठोकर आ दुत्कार।
तब–तब बहुते मन परल, माई तोर दुलार।।59।।

भागत गाछ– बिरीछ बा अउर खडा बा रेल।
'भावुक' अक्सर आँख से, इहे लउके खेल।।60।।

'भावुक' तोहरा साथ में, केतना भइल अनेत।
चिरूआ भर पानी मिलल, ओहू में बा रेत।।61।।

मन के भीतर चाह के, धधकत बाटे धाह।
मंजिल लउकत बा मगर नइखे लउकत राह।।62।।

भीतर–भीतर खोखला, बाहर से आबाद।
'भावुक' चक्कर नाम के कर देला बरबाद।।63।।

जवना गाछी पर फरे, 'भावुक' मिठका आम।
तवने पर ढेला चले, दुपहर, सुबहो शाम।।64।।

जाने कइसन आज ई, फइलल जाता रोग।
अनके सुख से बा दुखी, 'भावुक' सगरी लोग।।65।।

हमरा हालत पर हँसे, हमरे अब तस्वीर।
'भावुक' कइसन मोड़ पर, ले आइल तकदीर।।66।।

ऋतु बसंत के बा इहाँ, बस छन भर औकात।
जिनिगी–भर साथे रहे बस खाली बरसात।।67।।

जहवाँ हम रोपले रहीं किसिम–किसिम के फूल।
समय उगा के चल गइल, उहवें आज बबूल।।68।।

'भावुक' हो अति जे करी, हो जाई उ ध्वंस।
साक्षी बा इतिहास भी रावण रहल, ना कंस।।69।।

हाथी चले बजार त कुत्ता भौकें हजार।
'भावुक' हम एह साँच के देखलीं कई–कई बार।।70।।

'भावुक' छोटे उम्र में, एतना फइलल नाँव।
कुकुरो पीछे पड़ गइल, कउवो कइलस काँव।।71।।

कुकुराहट में मत पड़ीं, ई कुकुरन के काम।
रउरा सिरीजन से करीं, 'भावुक' आपन नाम।।72।।

'भावुक' एगो घर बदे, छछनत रहल परान।
बाकिर, कहवाँ घर बनल, भलहीं बनल मकान।।73।।

साँस–साँस में भूख बा, साँस–साँस में प्यास।
तब कइसे ई मन भरी, जबले बाटे साँस ।।74।।

'भावुक' हमरा पास बा, बावन बिगहा खेत।
बाकिर कवना काम के, जब सब रेते–रेत।।75।।

आरमानन के भीड़ बा, बाकिर दिल बा छोट।
एही से अक्सर इहाँ, दिल में लगे कचोट।।76।।

चलते–चलते राह में, आवे अइसन मोड़।
जहवाँ आपन साँस भी, देला संगत छोड़।।77।।

हमरा ई का हो गइल, 'भावुक' तहरा जात।
तहरे रट, तहरे फिकिर, तहरे खाली बात।।78।।

फागुन के उत्पातः भइल गुलाबी गाल

हई ना देखऽ ए सखी फागुन के उत्पात।
दिनवो लागे आजकल पिया–मिलन के रात।।1।।

अमरइया के गंध आ कोयलिया के तान।
दइया रे दइया बुला लेइये लीही जान।।2।।

ठूठों में फूटे कली, अइसन आइल जोश।
अब एह आलम में भला, केकरा होई होश।।3।।

महुआ चूअत पेड़ बा अउर नशीला गंध।
भावुक अब टुटबे करी, संयम के अनुबंध।।4।।

बाहर–बाहर हरियरी, भीतर–भीतर रेह।
जले बिरह के आग में गोरी गोरी देह।।5।।

भावुक हो तोहरा बिना कइसन ई मधुमास।
हँसी–खुशी सब बन गइल बलुरेती के प्यास।।6।।

हमरो के डसिये गइल ई फागुन के नाग।
अब जहरीला देह में लहरे लागल आग।।7।।

मन महुआ के पेड़ आ तन पलाश के फूल।
गोरिया हो एह रूप के कइसे जाईं भूल।।8।

हँसे कुंआरी मंजरी भावुक डाले–डाल।
बिना रंग–गुलाल के भइल गुलाबी गाल।।9।।

जब–जब आवे गाँव में ई बउराइल फाग।
थिरके हमरा होठ पर अजब–गजब के राग।।10।।

कोयलिया जब–जब रटे काम–तंत्र के जाप।
तब–तब हमरो माथ पर चढिये जाला पाप।।11।।

मादकता ले बाग में जब वसंत आ जाय।
कांच टिकोरा देख के मन–तोता ललचाय।।12।।

तन के बुझे पियास पर मन ई कहॉ अघाय।
ई ससुरा जेतने पिये ओतने इ बउराय।।13।।

गड़ी, छुहाड़ा, गोझिया भा रसगुल्ला तीन।
के तोहसे बा रस भरल, के तोहसे नमकीन।।14।।

चढ़ल ना कवनो रंग फिर जब से चढ़ल तोहार।
भावुक कइसन रंग में रंगलऽ अंग हमार ।।15।।

आग लगे एह फाग के जे लहकावे आग।
पिया बसल परदेश में, भाग कोयलिया भाग।।16।।

लहुरा देवर घात में ले के रंग–गुलाल।
भउजी खिड़की पे खड़ा देखें सगरी हाल।।17।।

अंगना में बाटे मचल भावुक हो हुड़दंग।
सब के सब लेके भिड़ल भर–भर बल्टी रंग।।18।।

साली मोर बनारसी, होठे लाली पान।
फागुन में अइसन लगे जस बदरी में चान।।19।।

कबो चिकोटी काट के जे सहलावे माथ।
कहाँ गइल ऊ कहाँ गइल, मेंहदी वाला हाथ।।20।।

फागुन में आवे बहुत निर्मोही के याद।
पागल होके मन करे खुद से खुद संवाद।।21।।

माघ रजाई मे रहे जइसे मन में लाज।
फागुन अइसन बेहया थिरके सकल समाज।।22।।

कींचड़–कांदों गांव के सब फागुन में साफ।
मिटे हिया के मैल भी, ना पूरा त हाफ।।23।।

महुए पर उतरल सदा चाहे आदि या अंत।
जिनिगी के बागान मे उतरे कबो वसंत।।24।।

के बाटे अनुकूल आ के बाटे प्रतिकूल।
ई कहवाँ सोचे कबो उड़त फागुनी धूल।।25।।

चलनी में पानी

गीत

बबुआ भइल अब सेयान कि गोदिये नू छोट हो गइल

बबुआ भइल अब सेयान कि गोदिये नू छोट हो गइल
माई के अंचरा पुरान, अंचरवे में खोट हो गइल

गुटु–गुटु गोदिया में दूध–भात खाइल
मउनी बनल अउरी भुइयॉ लोटाइल।
नेहिया–दुलरवा के बतिया बेकारे –
टूटल पिरितिया के डोर कि मन में कचोट हो गइल।

'चुलबुल चिरइया' में बबुआ हेराइल
बोले कि बुढिया के मतिये मराइल।
बाबा के नन्हकी पलनिया उजारे –
उठल रूपइया के जोर जिनिगिये नू नोट हो गइल।

भरल–पूरल घरवा में मन खाली–खाली
दियरी जरे पर मने ना दीवाली।
रतिया त रतिया ई दिनवो अन्हारे –
डूबल सुरूज भोरे–भोर, करेजवे में चोट हो गइल।

टुकी–टुकी बाबूजी के बाग हो गइल

टुकी–टुकी बाबूजी के बाग हो गइल
पतझड़ आइल अइसन दुलम साग हो गइल।

चूल्हा–चूल्हा कई गो चूल्हा
धनकत सपनन के सब दूल्हा
भइल सपनवा लंगड़ा–लूल्हा
मनवा जब सभकर गरमाइल
उठल लहोक, सभे अगिआइल
बाबूजी के घरवा आगे–आग हो गइल।
टुकी–टुकी.....।

'बिखरल खोंता' माई के नू
भाई भोंके भाई के नू
जीउवा भइल कसाई के नू
मनवा जब सभकर बउराइल
विषधर मने सभे बिखियाइल
बाबूजी के घरवा नागे–नाग हो गइल।
टुकी–टुकी.....।

बाबूजी के हालत बाटे
दिनवो काटे, रतियो काटे
सभे अपना मन के बाटे
मनवा जब सभकर अरूआइल
काँव–काँव के बोल सुनाइल
बाबूजी के घरवा कागे–काग हो गइल।
टुकी–टुकी.....।

बांझ हो गइल बा संवेदना के गांव

बांझ हो गइल बा संवेदना के गांव
नेह हो गइल बा बबूरवा के छांव

प्यार–प्रीत के जमीन रेह हो गइल बा
आत्मा मरल मशीन देह हो गइल बा
लेत बा ना केहू इंसानियत के नांव

करे जे अगोरिया से चोर हो गइल बा
देश प लुटेरवन के जोर हो गइल बा
कोरा में के लइका के जाई केने पांव

टुकी–टुकी गांव भइल, टुकी–टुकी घरवा
घरवो में घरवा आ ओहू में दररवा
'भावुक' जिनिगिया ई लागी कवने ठांव

अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया

बदरी के छतिया के चीरत जहजवा से
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया।
लन्दन से लिखऽ तानी पतिया पॅहुचला के,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया।

दिल्ली से जहाज छूटल फुर्र देना उड़ के,
बीबी बेटा संगे हम देखीं मुड़ मुड़ के।
पर्वत के चोटी लॉघत, बदरी के बीचे,
नीला आसमान ऊपर, महासागर नीचे।
लन्दन पॅहुच गइल लड़ते पवनवा से,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया।

हीथ्रो एयरपोर्टवा से बहरी निकलते,
लागल कि गल गइनी थोड़ी दूर चलते।
बिजुरी के चकमक में देखनी जे कई जोड़ा,
बतियावें छतियावें जहॉ तहॉ रस्ते।
हाल चाल पूछनी हम अपना करेजवा से,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया।

हर्टफोर्डसर पॅहुचलीं सॅझिया के बेरवा,
जहॉ बाटे कारखाना, जहॉ बाटे डेरवा।
डेरवा के भीतर ए सी, सब सुख बा विदेशी,
चट देना फोन कइली बीबी नईहरवा।
ठकचल बा बंगला विलायती समनवा से
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया।

भारत से अफ्रीका, फेरू युके चली अइनी,
रूपया, सिंलिंग, डालर, पाउन्ड हम कमइनी।
माई बाप चहलें से हम बनि गइनी
अपना सपनवा के धूरि में मिलइनी।
बेमन के नाता जुड़ल हमरो मशीनवा से
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया।

केहू नाहीं टोवे रामा भावुक के मनवा,
तड़पे मशीन बीचे उनकर परनवा।
गीतकार खातिर कलम, कलाकार खातिर कला,
एकरा समान दोसर कौन सुख होई भला?
ॲसुवन में बहे रोज सपना नयनवा से ,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया।

हमरा भीतर के कलाकार के मुआवऽ ताटे,
हमरा भीतर के गीतकार के सुतावऽ ताटे।
जाने कौना कीमत पे पइसा बनावऽ ताटे,
पापी पेट हमरा से हाय का करावऽ ताटे।
तड़पिला रात दिन कवना रे जमनवा से,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया।

तोहरा से कहऽ तानी सॉचो ए इयरवा,
काहे दूना लागत नइखे इचिको जियरवा।
हमरा के काटे दउड़े सोना के पिंजरवा,
मनवा के खींचऽ ताटे माई के ॲचरवा।
लौट चलीं देश अपना कवनो रे बहनवा से,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया।

तोहरा के देखला बरिस दिन भइलें

तोहरा के देखला बरिस दिन भइलें, बरिस दिन भइलें हो,
अइतऽ तऽ करतीं जी भर बात,
पिया हो अइतऽ त करतीं जी भर बात।

हमरा हियरवा के सून रे पिंजरवा में,
तोहरे सुधिया के चिरई चहके–चहके हो।
रतिया सपनवा में तोहरा से मिलनीं तऽ,
मनवा के बगिया लागल महके–महके हो।

आइल फगुनवा तऽ लागल अगनवा हो,
सावनों में जरलीं दिन रात।
पिया हो अइतऽ त करतीं जी भर बात।

कसक करेजवा में होला अधिरतिया के,
सेजिया चुभेला हमके गतरे गतरे हो,
लाल से पीयर भइली हमरी सुरतिया हो,
तोहरी फिकिरिया हमके कुतरे कुतरे हो।

मटिया मिलल जाला सोना के जवनिया हो,
काहे ना बूझेलऽ तू ई बात ?
पिया हो अइतऽ त करतीं जी भर बात।

रतिया भर अँखिया ई देखे चनरमा

रतिया भर अँखिया ई देखे चनरमा
हँसेला हम पे आकाश हो।
दूधवा के जइसन तोहरी सुरतिया,
भरेला मन में उजास हो।

आवेला जब कबो धीरे से नींदिया,
हमके पुकारेला माथे के बिंदिया,
खुल जाला अँखिया त, तोहरी सुरतिया,
लेबे ना देबे सवॉस हो।

अइसे त अँखिया ई का का ना देखलस,
बाकिर कबो तोहरा लेखां ना देखलस।
साँचो बसन्त होला, एह बतिया के अब
करेला मन विश्वास हो।

चनवा के पीछे पीछे मनवो चलेला
दियवा के संगे संगे तनवो जरेला।
रूपवा के रानी तोहके जतने निहारीं,
बढेला ओतने पियास हो।

किस्मत ले जाई कौना ओर

किस्मत ले जाई कौना ओर

अइसन धइलीं रस्ता जे ना जाये मंजिल ओर
बंद नयनवा में तड़पे सपनवा, देखे चारो ओर
जइसे जल बिनु तड़पे मछरिया, बिनु चँदा के चकोर।
किस्मत ले जाई कौना ओर?

तनवा के पिंजरा में मनवा के चिरई, चिरई के टूटल पाँख
कतनो फुर्र–फुर्र करिहें बाकिर धरिहें ना आकाश
ई अइसन दुख बाटे जेकर, ओर ना कवनो छोर।
किस्मत ले जाई कौना ओर?

कबो बनावे गंगू तेली, कबो बनावे भोज
आश–निराश के ऑखमिचौली मनवा खेले रोज
रोज उगेलें सूरज बाकिर, भइल ना अब ले भोर।
किस्मत ले जाई कौना ओर?

जब ले बा देहिंया में प्रान

जब ले बा देहिया में प्रान
तू असरा के दियरी जरइहऽ।

'जिनिगी के दुलहिन' के रोज एगो नखरा
नखरा उठावे में होला खूब रगरा
रगरा में खुशी चाहे गम मिले बखरा
गम पीहऽ अउर खुशी के,
तू जी भर लुटइहऽ।

एक हे गो मंजिल के पीछे करोड़
सोच–सोच हियरा में उठे मरोड़
सब केहू खोजत बा दोसरा के तोड़
सपना के रंगमहल के,
तू मेहनत के ईट से बनइहऽ।

कहिया ले किस्मत ई तोहरा से रूठी
मन से जो ठनबऽ तऽ सब बेड़ी टूटी
ललकी किरिनिया फूटी, फूटी, फूटी
एक दिन त होई अंजोर,
इहे सोच रतिया बितइहऽ।

हम त हईं मुसाफिर हमरा से तू प्यार मति करिहऽ

हम त हईं मुसाफिर हमरा से तू प्यार मति करिहऽ
अगर हो जाये नैना चार त इजहार मति करिहऽ

मुसाफिर प्यार के हमरा कबो इनकार मति करिहऽ
मुहब्बत बाटे तोहरे से केहू से प्यार मति करिहऽ

हवा के का भरोसा कब कहॉ चुपचाप चल देवे
लवटि के फिर कबो एह बाग में आवे कि ना आवे
कि अइसन बेठिकाना पे कबो एतवार मति करिहऽ
अगर हो जाये नैना चार त इजहार मति करिहऽ

हवा के सॉस में भरके उतारब प्रान के भीतर
तोहे खुशबू बना के राखब अपना जान के भीतर
कि अइसन फूल से, तू भूल से तकरार मति करिहऽ
मुहब्बत बाटे तोहरे से केहू से प्यार मति करिहऽ

अगर ई फूल ना होई हवा में के भरी खुशबू
पवन कइसे बसंती हो सकी, कइसे करी जादू
कि हमके छोड़ दोसरा के कबो स्वीकार मति करिहऽ
मुहब्बत बाटे तोहरे से केहू से प्यार मति करिहऽ

बोल रे मन, बोल

बोल रे मन, बोल –
जिन्दगी का हऽ, जिन्दगी का हऽ

आरजू मूअल, लोर बन के गम आँख से चूअल
आस के उपवन, बन गइल पतझड़, फूल–पतई सब डाल से टूटल
साध–सपना के दास्तां इहे, मर के भी हर बार –
मन के अंगना में, इंतजारी फिर बा बसंते के, बा बसंते के।

एक नया सूरज खुद उगावे के, खुद उगावे के
तब ई जाने के रोशनी का हऽ। ..... जिन्दगी का हऽ।

मन त भटकेला, रोज भटकेला, उम्र भर अइसे
अपने दरिया में प्यास से तड़पे एक लहर जइसे
हाय रे उलझन, एगो सुलझे तब, फिर नया उलझन, फिर नया उलझन
फिर भी ऑखिन में ख्वाब के मोती, चॉद के चाहत।

काश! मुट्ठी में चॉद आ जाये, चॉद आ जाये
तब ई जाने के चॉदनी का हऽ।.....जिन्दगी का हऽ।

लोर में देखलीं, चॉद के डूबल, रात मुरझाइल
पास तन्हाई, दूर तन्हाई, आसमॉ खामोश, फूल कुम्हिलाइल
जिन्दगी जइसे मौत के मूरत, वक्त के सूरत मौत से बदतर
फिर भी धडकन में आस के संगीत, जिन्दगी के गीत।

जिन्दगी के राग, गम के मौसम में, मन से गावे के
तब ई जाने के रागिनी का हऽ।..... जिन्दगी का हऽ।

मुहब्बत के इयाद्दन के भुलावल बा बहुत मुश्किल

किस्मत ले जाई कौना ओर

अइसन धइलीं रस्ता जे ना जाये मंजिल ओर
बंद नयनवा में तड़पे सपनवा, देखे चारो ओर
जइसे जल बिनु तड़पे मछरिया, बिनु चँदा के चकोर।
किस्मत ले जाई कौना ओर?

तनवा के पिंजरा में मनवा के चिरई, चिरई के टूटल पाँख
कतनो फुर्र–फुर्र करिहें बाकिर धरिहें ना आकाश
ई अइसन दुख बाटे जेकर, ओर ना कवनो छोर।
किस्मत ले जाई कौना ओर?

कबो बनावे गंगू तेली, कबो बनावे भोज
आश–निराश के ऑखमिचौली मनवा खेले रोज
रोज उगेलें सूरज बाकिर, भइल ना अब ले भोर।
किस्मत ले जाई कौना ओर?

हम तोहरा दिल में धड़कीं, तू हमरा दिल में धड़कऽ

दॉया–बॉया आखें में ना, अंग–अंग में फड़कऽ
हम तोहरा दिल में धड़कीं, तू हमरा दिल में धड़कऽ

रात पियासल, सॉस पियासल, तोहरे एगो आस पर
आवऽ हम धरती बन जाईं, तू छा जा आकाश पर
बदरी बन के प्यास बुझावऽ, बिजुरी बन के कड़कऽ

लाल चुनरिया, लाल सेज बा, लाल रोशनी बाटे
आज मुआ लऽ, आज जिया लऽ आजे जिनिगी बाटे
अरे–अरे दुलहा तनि सॅभल के, अइसे मत तू भड़कऽ

रंग–बिरंगी तितली का ओर टुकुर–टुकुर मत ताकऽ
खाली चेहरे मत देखऽ, मनवो का भीतर झॉकऽ
जेकरा दिल में काई होखे ओकरा के तू झिड़कऽ

दिल देनी, दिल लेनी, जोरा–जोरी नइखीं कइले
प्यारे कइले बानी कवनो चोरी नइखीं कइले
ए दुनिया के लोगन हमके अइसे मत तू घुड़कऽ

तहरे से घर बसाएब

तहरे से घर बसाएब, तहरे से घर बसाएब
हम जिन्दगी में तहरा बहार बन के आएब

रह–रह इयाद आवे पहिला मिलन के बतिया
ऊ ताल, ऊ तलइया, ऊ अँजोरिया के रतिया
जहवाँ तू कहले रहलऽ 'तहरा के ना भुलाएब'
तहरे से घर बसाएब, तहरे से घर बसाएब

पकवा इनार पर तू कहले रहऽ कि गोरी
तहरे से बान्ह लेनी अब नेह के ई डोरी
तहरा के छोड़ के अब, हम बोलऽ कहवॉ जाएब
तहरे से घर बसाएब, तहरे से घर बसाएब

दरियाव उम्र के अब साथी उफान पर बा
अब इश्क के परिन्दा बहुते उड़ान पर बा
अब अइसना में हम जो, बहकब त कहवाँ जाएब
तहरे से घर बसाएब, तहरे से घर बसाएब

तहरा हिया के धड़कन हमरा सुना गइल बा
अब प्यार के जरूरत हमरो बुझा गइल बा
तनहाई दूर होई, शहनाई लेके आएब
तहरे से घर बसाएब, तहरे से घर बसाएब

दिल के गली में अचके गुलजार हो गइल बा

दिल के गली में अचके गुलजार हो गइल बा
मोहे प्यार हो गइल बा, तोहे प्यार हो गइल बा

बदरी हटा के चंदा तनी सामने तऽ आवऽ
तनी सामने त आवऽ, तनी रोशनी देखावऽ
तहरा बिना ए दिल में, अन्हार हो गइल बा
मोहे प्यार.....

ना तू ही कुछुओ कहल, ना हमहीं कुछुओ कहलीं
तबहूँ पता ना कइसे, एक दोसरा के दिल में
एक दोसरा के खातिर, घर–बार हो गइल बा
मोहे प्यार.....

शहनाई लेके आइब, दुलहन तोहे बनाइब
पलकन प तोहके राखब, सपना के सच बनाइब
अब मन हमार गोरी, कचनार हो गइल बा
मोहे प्यार.....

नेह तहरा से लागल अँजोर हो गइल

नेह तहरा से लागल अँजोर हो गइल
साँच मानऽ जिनिगिया में भोर हो गइल
चान के देख मनवा चकोर हो गइल
साँच मानऽ जिनिगिया में भोर हो गइल

हम त आ गइनी सगरी डगर छोड़ के
अपना सईयां के बॉहिया में, घर छोड़ के
हाय मनवा हमार चितचोर हो गइल

लाज लागेला अभियो सिहर जाइले
साँच बाटे कि तहरा प मर जाइले
एह बतिया के कइसे दो सोर हो गइल

तोहसे अलगा एको पल ना रह पाइले
केहू तहरा के देखो ना सह पाइले
पीर हियरा में उठल हिलोर हो गइल

प्रान से बढ के तहरा के चाहीले
बस विधना से तहरे के मांगीले
तू तिलंगी तऽ बंदा ई डोर हो गइल

पिरितिया लगा के भुला त ना जइबऽ

पिरितिया लगा के भुला त ना जइबऽ
हिया में समा के परा त ना जइबऽ

लगवलऽ हऽ तूहीं मुहब्बत के लहरा
पढवलऽ हऽ तूहीं ई प्रेम–ककहरा
जुदाई के माहुर चटा त ना जइबऽ

सजल ख्वाब बाटे जे हियरा में हमरा
खिलल फूल बाटे जे ऑखिया में हमरा
कहीं धूर में तू बिछा त ना जइबऽ

ए दुनिया के देखत ई जियरा डेराइल
तबो बाटे असरा के दियना बराइल
नजर में चढा के गिरा त ना जइबऽ

तहरे से करीले प्यार, हमार मन मितवा

तहरे से करीले प्यार, हमार मन मितवा
तहरे से सोरहो सिंगार, हमार मन मितवा

मन के नगरिया रहे खाली–खाली
फींका–फींका रहे फगुआ–दीवाली
अइलऽ तऽ आइल बहार, हमार मन मितवा

जब से धरवनी हम, तहरा से यारी
मौसम में बाटे ई कइसन खुमारी
झिमिर झिमिर रस के फुहार, हमार मन मितवा

हमरा से कहिया तू घरवा बसइबऽ
हमरा के कहिया तू आपन बनइबऽ
कब ले करइबऽ इंतजार, हमार मन मितवा

पंडीजी से पतरा देखावे के बाटे
कउवा से लगन उचरावे के बाटे

अब का कहे के बा, अब का सुने के
हर हाल में बाटे साथे रहे के
तहरे से जिनिगी हमार, हमार मन मितवा

जब जब आवेला तहरी इयाद हो

जब जब आवेला तहरी इयाद हो
मोरा हियरा में खिलेला गुलाब हो

जब जब मिलल पिया तोहरा से आँख
मन मोरा बन गइल तितली के पाँख
तोर मिठकी नजरिया तऽ हवे ए सांवरिया
प्यार के एगो किताब हो
मोरा हियरा में खिलेला गुलाब हो

किरिया तोहार, हम तहरे के चहनी
तहरा सिवा हम, कुछुओ ना देखनी
खुद के भुला गइनी सुधिया, ए रामा
का दो, इहे हवे प्यार के हिसाब हो
मोरा हियरा में खिलेला गुलाब हो

रहीले अन्हरिया भा रहीले अँजोरिया
बेर–बेर याद आवे तहरी सुरतिया
जोन्हियन के बीच से मन के तलइया में
उतरेला गोर–गोर चाँद हो
जब–जब आवेला तहरी इयाद हो

दिन–रात उड़ेला मनवा के मैना
तबहूँ ना पावेला कतहूँ ई चैना
जब ले मिलावे ना तहरा से नैना
तहरे फिकिरिया में डूबल रहीले
तहरे बा दिन–रात ख्वाब हो
मोरा हियरा में खिलेला गुलाब हो

फागुन में फगुआ के लागल लहर,

फागुन में फगुआ के लागल लहर,
लोग जुटल बा, सब तइयारी में।
होली के मदहोशी, अब का कहीं हम,
मस्ती बा आरी–पगारी में।

मटकी चलावेला, लहुरा देवरवा,
भरेला रंग पिचकारी में।
छुप के छुपाके, बचाके नजर,
आके ध लेला, उ अंकवारी में।
भर देला चोली, भींगा देला चुनरी,
लिपट जाला, तनवा के साड़ी में।
सईयां जरतुआ जर–जर बुताला,
आ चक्कर काटेला दुआरी में।
हई देखीं, बुढऊ भइल बाड़े बेहाल,
मस्ती चढल बा बुढारी में।
बोल ले बोली, चलावेले गोली,
सुनावेले गारी, बाजारी में।

'भावुक' अनाड़ी ना बूझेले होली,
ना भरेलें रंग, पिचकारी में।
मनवा से होली, उड़स गइल बाटे
आ मनवा रमल बा मतारी में।

रंगवा के एक दिन, खुनवा के सब दिन,
होली होला चारदीवारी में।
भाई के भाई भोंकेला खंजर,
सोंची, इ कवना लाचारी में।
रोटी आ रोटी, लइका चिलाला,
नेतवा लागल बा मदारी में।
रोटिया देखा के ले लेला वोटवा,
देशवा लूटे पारा–पारी में।
अइसे में प्यार पली कवना दिल में,
खिली फूल कवना कियारी में।
माई के इज्जत पे खतरा रही त,
के हरियर रही फुलवारी में ?

दिल बा दियरी भइल, देह बाती भइल

दिल बा दियरी भइल,
देह बाती भइल
तेल नेहिया के लेके ना आईं प्रिये
आईं, आके दीवाली मनाईं प्रिये।

रात बेचैन बा
दिन दिवाना भइल।
मन बा चंचल आ
यौवन सयाना भइल।
बात बुझीं ना, जल्दी से आईं प्रिये
आईं, आके दीवाली मनाईं प्रिये।

चाँद कहके
सराहत रहीं रूप के।
चाँद के रोशनी त
मिले धूप से ।
बनके सूरज, ए चंदा के आईं प्रिये
आईं, आके दीवाली मनाई प्रिये।

चाँद के माँग सूना
भरीं लालिमा।
देर बहुते भइल,
कब मिटी कालिमा।
चाँदनी में डूबीं उतराईं प्रिये
आईं आके दीवाली मनाईं प्रिये।

फागुन के आइल बहार हो

नायक फागुन के आइल बहार हो, आवऽ–आवऽ सांवरिया
नायिका मत छेड़ऽ दिलवा के तार हो, अभी बारी उमरिया

नायक बारी उमरिया के गोरी बहाना
चली ना अबकी बार हो, मारब पिचकरिया।

नायिका का–का दो रतिया में, बोले कोयलिया
धड़केला जिउवा हमार हो, कान्हा छोड़ डगरिया।

नायक फागुन महीना, सभे फगुआइल
डारे द रंगवा के धार हो, भींजे द चुनरिया।

नयिका रंग–अबीर त बाटे बहाना
बूझीले नीयत तोहार हो, चलऽ हटऽ बावरिया।

नायक मौसम में मस्ती, जिया बउराइल
बहकेला मनवा हमार हो, उठेला लहरिया।

नायिका अब का करीं हाय, अब का करीं हम
जिउवा भइल बेसम्हार हो, मारऽ पिचकरिया।

कोरस बहे बसंती बयार हो, उड़ेला चुनरिया
मौसम बड़ा बा मयार हो, आवऽ अंकवरिया
अँखिया भइल आज चार हो, देख भर–भर नजरिया
करऽ तू सोरहो सिंगार हो, चलऽ हमरी सेजरिया
डोली ले आवऽ कंहार हो, चलीं तहरी नगरिया

दोनो फागुन के आइल बहार हो, आवऽ आवऽ साँवरिया
झनकेला दिलवा के तार हो, कान्हा रंग द चुनरिया
दिलवा बडी बेकरार हो, आवऽ आवऽ सांवरिया
फागुन के लूटऽ लहार हो, मारऽ पिचकरिया

चइता
गोरी के बदन गदरइले हो रामा

गोरी के बदन गदरइले हो रामा
चइत मासे अइले।

पोरे–पोरे गोरिया के रस भरी गइले
रस भरी गइले रामा रस भरी गइले
जोबना के जोर नाहीं सहले सहइले
सहले सहइले रामा सहले सहइले
चोलिया के बन टूटी गइले हो रामा
चइत मासे अइले।

देवरा करेला भउजी से ठिठोली
भउजी से ठिठोली रामा, भउजी से ठिठोली
मति सूतऽ भउजी हो, किलिया के खोली
किलिया के खोली भउजी, किलिया के खोली
देखी तोहे मन बउरइले हो रामा
चइत मासे अइले।

धरऽ धीर देवरू हो, मानऽ मोर कहना
मानऽ मोर कहना हो मानऽ मोर कहना
अइहें भइया त कराइब तोर गवना
कराइब तोर गवना कराइब तोर गवना
काहे बालेपन मन धधइले हो रामा
चइत मासे अइले।

लड़ले तऽअँखिया, बथेला करेजवा काहे

शेर – गुलाबी रंग में तहरी, शराबे के मजा बाटे
पिया दऽ जाम आँखिन से, इहे तोहे सजा बाटे

लड़ले तऽ अँखिया, बथेला करेजवा काहे
हियरा में उठेला हिलोर काहे सइयां
छुई–मुई बन जाला, देहिया सिहर जाला
पड़ेला जवनिया प जोर काहे सइयां

तहरे ही रंगवा में चुनरी रंगाइब
तहरे ही छइयां में सेजिया सजाइब
तहरे से घरवा बसाइब
बतिया ई पड़े तोरा भोर काहे, सइयां
हियरा में .....

बिन्दिया चमक जाला, चूड़िया खनक जाला
गजरा महक जाला, कजरा बहक जाला
चोलिया कसक जाला हो
ताकेलऽ तू अइसे हमरी ओर, काहे सइयां
हियरा में .....

आवऽ, अँखिया से अँखिया मिलावऽ तनी
आवऽ, हमरो पिअसिया बुझावऽ तनी
दहकत देहिया के छू ल तनी
बहकता मनवा ई मोर काहे संइयां
हियरा में .....

रहिया में रहि–रहि डर लागे हो

रहिया में रहि–रहि डर लागे हो
कइसन करिया बा रात।
छपले बा अइसे बदरिया नू हो
सुरूज चलेले लुकात।

दंगा– फसाद रोज रोज मार–काट देखि
लोग–बाग खानदानी घर छोड़ जात बाटे
छिछियाता जगे–जगे, भागल –परात बाटे
भूखे–प्यासे अउरी हदासे मर जात बाटे
गजरा आ मूरई के लेखां नू हो
अब लोगो बा कटात।

दिने–दुपहरिया में अस्मत लुटात बाटे
तिले–तिले द्रौपती के चीर हरात बाटे
दुःशासन, रावण, कंस अतना बिअइले कि
गली–गली पसरल उनके जमात बाटे
तबो कवना दुविधा में बानी रउरा हे,
कहीं द्वारिका के नाथ।

पढल–लिखल लोग जहाँ सल्फास खात बाटे
अनपढ–गँवार घूस देके घुस जात बाटे
योग्यता के नाम पर पूछल जात–पात बाटे
बात–बात पर जहाँ होत रक्तपात बाटे
थरऽ थरऽ काँपत बा जिउवा नू हो,
जइसे पुरइन के पात।

कइसन सुराज?जहाँ डेगे डेगे डर बाटे
देशी अंगरेजवन के आजुओ कहर बाटे
चोरे अउरी डकइत सभका ऊपर बाटे
जाति–पाति, धरम के घोरत जहर बाटे
रही कइसे अमन आ चैन नू हो
जब साँपे बा पोसात।

घुस गइल बाडन घरे चील, कउवा, बाज अब
नोंच–नोंच खाई जइहें, देश के सुराज अब
जागऽ–जागऽ देश के जवान, जागऽ जागऽ हो
ना तऽ, डूब जाई, भाई देश के जहाज अब
दुश्मन लगवले बा धात नू हो
ठीक नइखे हालात।

अबकी आवे अइसन नयका साल

अबकी आवे अइसन नयका साल
सबका थाली में हो रोटी दाल।

भाभी के पिल्ला चाभेला रोजे दूध मलाई।
भउजी के लल्ला रोवेला भूखे माई माई।
एह अन्तर के खाई पाटे, सभे होय खुशहाल।
अबकी आवे अइसन नयका साल

नइखी माँगत दिन सोना के आ चांदी के रात।
बाकिर सभका थरिया में होखे के चाहीं भात।
भूखमरी से मरे ना अब भारत के कवनो लाल
अबकी आवे अइसन नयका साल

नोट त केहू खाई नाहीं, खाई आखिर रोटी।
भूखे रही किसान त भावुक, कहॉ से रोटी होखी।
जिनिगी बा तबले ही जबले बा गेंहूँ में बाल।
एह से ए भाई
अबकी आवे अइसन नयका साल,
सबका थाली में हो रोटी दाल।

भइया के मुँह से फूटे संगीत,
भउजी के कंगना से खनके ताल।
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल,
शुभ हो, मंगलमय हो, नयका साल।
अबकी आवे अइसन नयका साल,
सबका थाली में हो रोटी दाल।

डूबत सूरज के निशान भइल जिनिगी

डूबत सूरज के निशान भइल जिनिगी
बदरी भरल आसमान भइल जिनिगी

रोटी के टुकड़ा के जिनिगी रखैल
डॅकरत बा रहि–रहि के कोल्हू के बैल
एगो सवालिया निशान भइल जिनिगी
बदरी भरल आसमान भइल जिनिगी

मन के घोंसारी में धधकत बा धाह
लहरत बा रहि–रहि के अतृप्त चाह
पाँख कटल एगो उड़ान भइल जिनिगी
बदरी भरल आसमान भइल जिनिगी

रहनी नादान भइल हमरो से चूक
बदला में मिल गइल हियरा में हूक
ऊभ चूभ करत परान भइल जिनिगी
बदरी भरल आसमान भइल जिनिगी

बेबाते के बात

मन में भरल रही बिसमाद
पल–पल उठत रही अवसाद
त टभ–टभ अउरो टभकी घाव।
करऽ चीड़–फाड़, बहावऽ पीभ
लगावऽ मरहम आ होखे दऽ फिर से,
शुद्ध रक्त संचार।
कि आवऽ फिर से करे के प्यार।

बहुत भइल अब मुँह फुलउवल
बहुत भइल कोहनाइल।
बेबाते के बात बढल
आ खिलल प्यार कुम्हिलाइल।
तऽ ढाहऽ नफरत के दीवार ।
कि आवऽ फिर से करे के प्यार।

तहरो मन पर बोझा भारी
हमरो मन पर बोझा भारी
जिनिगी के बोझा का कम बा
जे नधलऽ ई दुनियादारी?
छोडऽ ना मर्दे अब ई
बेमतलब के तकरार।
कि आवऽ फिर से करे के प्यार।

दूध के धोअल के बाटे हो
केकरा से ना गलती होला।
बात–बात में बात बढे तऽ

बात धुनेला टोली–टोला।
कि तहरो हार बा हमरो हार
कि हमरो हार बा तहरो हार
त फेरू कइसन ई तकरार?
कि आवऽ फिर से करे के प्यार।

गंगा बन के पी जाये के
आवऽ फिर से जी जाये के
एक दूजे के हो जाये के
प्यार के बिरवा बो जाये के
प्यारे हऽ संसार।
कि आवऽ फिर से करे के प्यार।

भुलाजा तूहूँ बीतल बात
भुलाईं हमहूँ बीतल घात
कि जाये करिया–करिया रात
कि आवे उज्जर–उज्जर प्रात
कि लौटे फिर से ऊ मधुमास
ए भाई! विदा करऽ पतझाार।
कि आवऽ फिर से करे के प्यार।

लेके आइल बाटे पूर्वी बयार टी वी

लेके आइल बाटे पूर्वी बयार टी वी
ई हमार टी वी, ई हमार टी वी

देखीं न्यूज, देखीं व्यूज पहिला बार भोजपुरी में
अंगिका, बघेली अउरी खोरठा, नागपुरी में
अइसन आइल बाटे पहिला पहिला बार टी वी।

एह में मैथिली, अवधी अउरी बज्जिका के फूल
एह में लोकभाषा सबके बनल बाटे पूल
ई हऽ लोक खातिर, लोक के लहार टी वी

लोग कहेला हमार टी वी, हमार पहचान
ई हऽ पूरब के शान आ पुरबियन के जान
अरे सबकर पसंद बा हमार टी वी

ई हमार टी वी हऽ, तोहार टी वी
ए भइया इहे हवे आपन तोहार टी वी
ई हमार टी वी, ई हमार टी वी

इ आज के डिमांड बा रउरा ना बुझाई

इ आज के डिमांड बा रउरा ना बुझाई
नर नर संगे, मादा मादा संगे जाई

हाई कोर्ट देले बाटे अइसन एगो फैसला
गे लो के मन बढल, लेस्बियन के हौसला
भइया संगे मूंछ वाली भउजी घरे आई

खतम भइल धारा अब तीन सौ सतहत्तर
घूमतारे छुट्टा समलैंगिक सभत्तर
रीना अब बनि जइहें लीना के लुगाई

पछिमे से मिलल बाटे अइसन इंसपिरेशन
अच्छे भइल बढी ना अब ओतना पोपुलेशन
बोअत रहीं बिया बाकिर फूल ना फुलाई।

मनोज 'भावुक'

जन्म – 02 जनवरी 1976
जन्म स्थान – कौसड़, सीवान, बिहार
अनुभव – 15 वर्ष भोजपुरी मीडिया में
(गीतकार/पटकथा लेखक/ फिल्म समीक्षक/एंकर/अभिनेता/देश विदेश में भोजपुरी का प्रचार प्रसार)

नाटक में डिप्लोमा–
बिहार आर्ट थियेटर (पेरिस, यूनेस्को की प्रांतीय इकाई,)
कालिदास रंगालय, पटना द्वारा संचालित नाट्य कला डिप्लोमा के टॉपर।

प्रकाशित पुस्तक –
1. **तस्वीर जिन्दगी के** (भोजपुरी गजल–संग्रह)
(इस पुस्तक के लिये भारतीय भाषा परिषद सम्मान 2006)
2. **चलनी में पानी** (दोहा–गीत संग्रह)

प्रकाश्य –
1. **जिनिगी रोज सवाल** (कविता–संग्रह)
2. **भोजपुरी सिनेमा के विकास–यात्रा**
(मिलेनियम स्टार अमिताभ बच्चन, सुजीत कुमार,
राकेश पाण्डेय, कुणाल सिंह, मोहन जी प्रसाद, अभय सिन्हा
अशोक चंद जैन, रवि किशन, मनोज तिवारी, कल्पना एवं भरत शर्मा सरीखे दो

दर्जन फिल्मी हस्ती से बात–चीत, इतिहास,
लगभग 250 भोजपुरी फिल्मों पर विहंगम दृष्टि,
भोजपुरी सिरियल एवं टेलीफिल्म आदि।)

3. **भोजपुरी नाटक के विकास–यात्रा** (शोध–पत्र)
4. **भउजी के गाँव** (कहानी–संग्रह)
5. **बदलों को चीरते हुए** (अफ्रिका एवं यूरोप प्रवास की डायरी)
6. **रेत के झील** (ग़ज़ल–संग्रह)
7. **कलाकार** (नाटक)

नाट्य–रूपांतर व निर्देशन–

फूलसुंघी–भोजपुरी का लोकप्रिय व बहुचर्चित उपन्यास (उपन्यासकार–आचार्य पाण्डेय कपिल)

नाट्य–अभिनय व निर्देशन –

हाथी के दाँत, मास्टर गनेसी राम, सोना, बिरजू के बिआह, भाई के धन, सरग–नरक, जंजीर, कलाकार, फूलसुंघी,
बकरा किस्तों का, इस्तिफा, ख्याति, कफन, मोल मुद्रा का, धर्म–संगम, बाबा की सारंगी, हम जीना चाहते हैं व नूरी का कहना है आदि।

अन्य कलात्मक सकियता –

- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित।
- रंगमंच, आकाशवाणी,दूरदर्शन में बतौर अभिनेता, गीतकार, पटकथा लेखक।
- पहली भोजपुरी धारावाहिक 'साँची पिरितिया' में अभिनय।
- भोजपुरी धारावाहिक 'तहरे से घर बसाएब' में कथा–पटकथा–संवाद–गीत लेखन।
- पटना दूरदर्शन से एंकरिंग।
- भरत शर्मा व्यास द्वारा भावुक के चुनिन्दा गजलों का गायन
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचो से काव्य–पाठ, व्याख्यान एवं भाषण।
- भारतीय रेडियो, दूरदर्शन और समाचार पत्र के अलावा BBC LONDON से भी interview प्रकाशित–प्रसारित–प्रदर्शित।
- विश्व भोजपुरी सम्मेलन के आठवें राष्ट्रीय अधिवेशन में (4,5,6 अक्टूबर 2007)

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में मंच संचालन, संयोजन व विषय–प्रवर्तन।

- रचताएं इग्नू के पाठ्यक्रम में शामिल।

सम्बद्धता –

- राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व भोजपुरी सम्मेलन (इंग्लैण्ड)
- संस्थापक, भोजपुरी एसोशिएसन ऑफ युगाण्डा (BAU) पूर्वी अफ्रिका
- मंत्री, मारीशस भोजपुरी सचिवालय
- पूर्व प्रबंध मंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना
- भोजपुरी की लगभग सभी संस्थाओं से जुडाव।
- U.K की एकमात्र हिन्दी पत्रिका पुरवाई और Mauritius की पत्रिका बसंत में भी रचनायें संकलित
- भोजपुरी की लगभग डेढ दर्जन पत्र पत्रिकाओं भोजपुरी अकादमी पत्रिका, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, समकालीन भोजपुरी साहित्य, कविता, पनघट, महाभोजपुर, पाती, खोईंछा, भोजपुरी माटी, पहरूआ, भोजपुरी संसार, भोजपुरी वर्ल्ड, पूर्वांकुर, विभोर, भैरवी, निर्भीक संदेश और द सण्डे इण्डियन (भोजपुरी) में लेखन।
- रचनायें विभिन्न webmagzines में भी।
- U.K Hindi Samiti के सदस्य
- UK Moderator of Global Bhojpuri Group on The Net.
- अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीच्यूट के रिसर्च बोर्ड ऑफ एडभाइजरी कमिटी के मानद सदस्य
- प्रधान संपादक www.bhojpatra.net (An Online Bhojpuri Content Management System)
- सलाहकार, www.purvanchalexpress.com
- विदेश संपादक, समकालीन भोजपुरी साहित्य

सम्मान–पुरस्कार –

- भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता द्वारा भोजपुरी गजल–संग्रह 'तस्वीर जिन्दगी के' के लिये – सिनेहस्ती गुलजार और ठुमरी साम्राज्ञी गिरिजा देवी के हाथों भारतीय भाषा परिषद सम्मान 2006, (भोजपुरी साहित्य के लिए पहली बार यह सम्मान)।

- बिहार कलाश्री पुरस्कार परिषद द्वारा रंगमंच के क्षेत्र में विशिष्ट, बहुआयामी और बहुमूल्य योगदान के लिये – बिहार कलाश्री पुरस्कार

BBC HINDI.com

युवा कवि को भारतीय भाषा सम्मान

कोलकाता स्थित संस्था भारतीय भाषा परिषद ने भोजपुरी के युवा कवि मनोज भावुक को उनके भोजपुरी ग़ज़ल संग्रह के लिए भारतीय भाषा परिषद सम्मान से नवाज़ा है.

मनोज भावुक को अपने ग़ज़ल संग्रह के लिए यह पुरस्कार मिला

इस ग़ज़ल संग्रह का नाम है- तस्वीर ज़िंदगी के. पहली बार किसी भोजपुरी साहित्य को यह सम्मान मिला है. कोलकाता में हुए युवा महोत्सव के दौरान मनोज भावुक को ये सम्मान दिया गया.

उन्हें सम्मान प्रदान किया ठुमरी सामाज्ञी गिरिजा देवी और सिने जगत के नामी फ़िल्मकार और गीतकार गुलज़ार ने.

इस कार्यक्रम में वर्ष 2005 के लिए पुरस्कार पाने वाले युवा साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया. ये हैं- लीलाक्षी सिंह (हिंदी), अजमेर सिद्धू (पंजाबी), थौड़म नेत्रजीत सिंह (मणिपुरी) और हुलगोल नागपति (कन्नड़).

इस वर्ष यानी वर्ष 2006 के लिए मनोज भावुक के अलावा जिन युवा साहित्यकारों को सम्मानतिक किया गया, वे हैं- हिंदी के लिए यतींद्र मिश्र, उर्दू के लिए शाहिद अख़्तर और मलयालम के लिए संतोष इच्चिकन्नम.

सम्मान

मनोज भावुक की रचनाओं के बारे में टिप्पणी करते हुए भारतीय भाषा परिषद के मंत्री डॉक्टर कुसुम खेमानी ने कहा, "मनोज भावुक सुदूर युगांडा और अब लंदन में रहते हुए भोजपुरी में लिख रहे हैं. उनकी कविताएँ पौधे की तरह लोक जीवन की धरती पर पनपी हैं और अपना जीवन रस वहीं से प्राप्त कर रही हैं."

डॉक्टर खेमानी ने मनोज भावुक की रचनाओं की जम कर तारीफ़ की और कहा कि युवा कवि सामाजिक सरोकारों को भोजपुरी के ठेठ मुहावरों में मुखरित करते हैं. उन्होंने कहा कि भारतीय भाषा परिषद मनोज भावुक को सम्मानित करते हुए गौरवान्वित है.

> **"मनोज भावुक सुदूर युगांडा और अब लंदन में रहते हुए भोजपुरी में लिख रहे हैं. उनकी कविताएँ पौधे की तरह लोक जीवन की धरती पर पनपी हैं और अपना जीवन रस वहीं से प्राप्त कर रही हैं"**
>
> डॉक्टर कुसुम खेमानी

इस मौक़े पर युवा कवि मनोज भावुक ने कहा, "दरअसल यह भोजपुरी भाषा और साहित्य का सम्मान है. साथ ही यह उन करोड़ों भोजपुरी भाषियों का भी सम्मान है. जो देश-विदेश में रहते हुए भी भोजपुरी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं."